राजसिंह नाटक

हरिहर प्रसाद प्रोप्राइटर अग्रवाला प्रेस

विरचित ।

RAJ SINHA

A Comedy in VI Acts.

by

Harihar Prasad

Proprietor " Agarwala Press "

अग्रवाला प्रेस, साहब गंज-गया ।

हरिहर प्रसाद द्वारा मुद्रित वो प्रकाशित ।

सन १९०६ ई० ।

प्रथम बार १००

मुल्य =)



श्री हरि :

मैं और पुस्तक रचूं ! यह असम्भव है । यदि हमारे परम मित्र बाबू रघुनाथ सेन सिंह टीचर टिकारीस्कूल गया की फरमाइश, बाबू सी० एल० सिंह सब इंस्पेक्टर स्कूल पटना की उत्साह और बाबू गोपाल दास जो सब इंस्पेक्टर स्कूल गया की सहायता न होती तो आज इस ग्रंथ का रूप देखने मे नहीं आता ।

मैं हिन्दी भाषा का पंडित नहीं हूं इसलिये पाठक से प्रार्थना है कि भूल चूक पर ध्यान न दें

हरिहर प्रसाद

नाटक पात्र

स्त्री

बिद्युत प्रभा— रूप नगर के राजा बिक्रम की कन्या.
निरमला—सहेली
बूढिया—चित्र बेचने वाली
बेगम—जोधपुर की राज तन्या
मुन्ना—रूप नगर की बेश्या.
यशोदा—अनंत मिश्र की स्त्री

गायकी, सखियां इत्यादि

पुरुष

राज सिंह— राणा उदय पुर.
विक्रम सिंह— राजा रूप नगर.
अनंत मिश्र— प्रोहित रूप नगर
मानिक सिंह— डाकू उदयपुर
हसनुल्ला खां— सेना पति मुगल सेना
मुबारक— सिपह सालार मुगल सेना.

मंत्री, चोपदार, सेना इत्यादि.

राज सिंह नाटक

प्रथम अङ्क

दृश्य १—राजमहल

(विद्युत प्रभा सहेलियों के साथ दिखाई देती है)

गाना नः १

(तर्ज— आज चमकाथा मेरा तालये)

विद्युत प्रभा — क्षुद्र जीवन से करे जग मे कोई आस नही
आज है कल न रहे सांस का विश्वास नही
स्वप्न देखा है कि दिल्लीश की बद दृष्ट हुई
मुझ अभागिन को तो सुख देगा यह आकास नही
डोली लेजाने को प्रस्तुत है मुगल की सेना
हाय बस्नेही हुआ रूप नगर नास नही
जोधपुर आदि का सौभाग्य औ कुल की मर्य्याद
नष्ट करने प भी रे दुष्ट गई प्यास नही
क्षुद्र राजा की हू' बेटी मुझे प्रीय है दारिद्र
म्लेक्ष की राज बधू होने का अभिलास नही
जी ठिकाने नही' चित्त होता है व्याकुल अतही
निरमला जीने का अब मेरे तनिक आस नही

आग मे कूद पड़े, डूब मरे, विष खाले
पर करे हंसनी बगुले के निकट वास नहीं

गाना नः २

(तज — तू सचमुच हसीनो की सरदार हो)

१ ली सखी — नहीं चित्त को अपने दुखित तुम करो
२ री सखी — न सपने की बातों से एतना डरो
३ री सखी — संभालो हृदय मन मे धीरज धरो
१ ली सखी — बहुत चित्त है कोमल तुम्हारा सखी
२ री सखी — न चिन्ता अधिक मन मे लावो कभी
३ री सखी — दशा अपनी इस दम की देखो ज़री

(एक बुढियो का प्रवेश)

१ स० —बुढिया तु क्या बेचती है ?

बु० — मैं चित्र बेचती हुं हाथी दांत के बने रंग बरंग के मनोहर चित्र लाई हुं इन की प्रशंसा देखनेही पर निर्भर है यदि आज्ञा हो तो पिटारी खोलूं ।

नि० — हां हां नानी बैठ जाओ और राजकुमारी को चित्र दिखलाओ इन की अवलोकन से सोच का दल सिर से टल जायगा जी संभल जायगा चित्त अवश्य बहल जायगा

(बुढिया बैठ कर चित्र निकालती है)

बु० — यह लीजिये जहांगीर बादशाह का चित्र

(आगे बढाती है)

नि० — (चित्र को देखकर) इस को दाम क्या है?

बु० — पांच सौ रुपै

१ स० - क्यों नानी! इस चित्र के व्यक्ति को नूर जहां ने कितने मे खरीदा था ?

बु० — [हंसकर] बिना मूल्य

स० — जब असल बेदाम बिका तो इस नकली चित्र को कुछ अपने पास से मिला कर यहां छोड़ जाओ

[सब की सब हंसती हैं]

बु० – तो फिर किसकी तस्वीर दिखाऊं?

वि०— किसी हिन्दू राजा की

बु०— [पिटारी से निकाल कर] यह लीजिये राजा मान सिंह, राजा बीर बल, राजा जय सिंह

वि०— यह लोग तो हिन्दू सही केवल मुगलों के दास थे। किसी बीर क्षत्री राजा का चित्र दिखाओ

[बुढिया एक चित्र निकाल कर आगे रखती है]

वि०— यह किसका चित्र है?

बु० -- यह उदय पुर के राणा राज सिंह हैं

[विद्युत चित्र को हाथ में लेती हैं]

गाना नः ३

[तर्ज — मन तू काहे दिवाना है रे]

छवि बांकी की झलक अति सुन्दर
चित्र की शोभा न्यारी बनी है
बाहुं बिशाल, ललाट चन्द्र सम
बीर छटा, मन हारी बनी है
जग भूषण रवि छबिहि लजावत
प्रतिमा ऐसी प्यारी बनी है
सुकुमारी हिय सहजहीं बेधत
अंखिया लाल कटारी बनी है

[निर्मला से] यह चित्र मैं अवश्य लूंगी

बु० — [दूसरी तस्वीरें लेकर] यह राणा प्रताप सिंह, यह राणा अमर सिंह और यह राणा यशवन्त सिंह हैं

वि० — हां यह सब वीर पुरुष हैं इन्हे भी रहने दो.

बु० — (एक चित्र पिटारी से निकाल कर) राज कुमारी! आप वीरता की पारखी मालूम पड़ती हैं तनिक इस चित्र को भी देखिये।

वि० — (हाथ मे लेकर) यह किसका चित्र है?

बु० — जगत विजई बादशाह आलमगीर का जिसने सारे हिन्दुस्थान को अपने वश मे किया है

वि० — अरे कौन औरंगज़ेब! मेरे स्वप्न का नायक! हिन्दू मात्र का द्रोही! आर्य्यवर्त का कुठार! भारत का शत्रु! अच्छा तो लाओ मै दिखादूं कि क्षत्री वंश की वीर कन्यायें इस का कैसा आदर करती हैं और मति हीन बालकायें खेलौना समझ कर इसके संग कैसे खेलती हैं।

(चित्र को पावों के नीचे दबाती है)

नि० — (दौड़कर)

गाना नः ४

(तर्ज— मत शौंह सितम करना)

क्या किया ऐ प्यारी तुमने?
हुआ है हुआ है तुम्हें यह आज क्या
हो गई हाय हाय कैसी बालिका
कहा मेरा मान
सच इसे जान
आलमगीर सुनेगा, होवेगी, बुरी दशा

[बुढ़िया से हाथ जोड कर] नानी इस बात को किसी से मत कहना राज कुमारी अवस्था वश किसी बात का शुभाशुभ नही विचारती हैं

बु० — भला यह बातें मुह से निकालने की हैं आप इस की चिन्ता न करें

(बुढिया जाती है)

—०—

दृश्य--२ मकान।
(राज सिंह महल में बैठे हैं)

गाना नः ८

[तर्ज-हवस को हमने जाना है]

रा० — नहीं जो चित्त बहलता है
अरे मन क्यों दहलता है
प्रेम जहां उत्पन्न हो मुन्न हृदय तहं होय
प्रीत कुकाठहु ब्रृक्ष को जानत है सब कोय
न फूले है न फलता है
अरे मन क्यों दहलता है
गोल कपाल कटाक्ष दृग चन्द्र बदन मृदुबैन
चितवत हिय सर समलगत उमगै पापी मैन
संभाले कब संफलता है
अरे मन क्यों दहलता है
प्रेमी चित स्थिर नहीं रहि २ मन अकुलाय
सुधि आवत फाटै हृदय धीरज जात पराय
न इस पर जोर चलता है
अरे मन क्यों दहलता है
प्रीत जलधि मन नावको, केहि विधि लागे पार
कोट यतन कोउ कर्म्म को रेख न मेटनहार
न लिक्खा इस का टलता है
अरे मन क्यों दहलता है

हैं! आज क्या है जो चित इस तरह व्याकुल हो रहा है! भोजन से अरुचि है और आंखों मे नीन्द नहीं घर कांटा सा आंखो में खटकता है जी व्यग्रता से पचासों ओर भटकता है! कभी सोंचता हूं कि राज काज त्याग कर योगी बन जाऊं फिर कहताहूं कि व्यर्थ क्यों सिर मुंड़ाऊं बैठे बिठाये आपत्ति उठाऊं जान को जंजाल मे फसाऊं

पर नहीं ! जो माननाही नहीं यह दखेड़ा ठानताही नहीं । बस्ती से मन बिमुख है घर में इसे दुख है जंगल में सुख है । अच्छा वन ही सही । क्या जंगल में मंगल नहीं हो सक्ता? बस तो चलूं आखेट से जी बहलाऊं कोई है?

दूत-जो आज्ञा

रा०-दक्षिण के पहाड़ों पर शिकार खेलने जाऊंगा २०० सिपाहे शीघ्र तय्यार हो जायें

—o—

दृश्य- ३ महल

(दिल्लीश्वर अपने बेगमों के साथ बैठे नाच देखते हैं)

गाना नः ६

[तर्ज- मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले]

१ गायकी - कैसी भोली मेरी जान , तेरी सूरत पर हूं वारी
ऐसी है नन्ही नादान
मुझ को कहती है अंजान
अपने आशिक़ को पहिचान, सीधे पन की हूं बलिहारी
आंखो के हैं डोरे लाल
ओंठ गुलाबी गोरे लाल
सिर पर घुंघर वाले बाल, नोखी चाल गजब कि न्यारि
पंहीने उलफत की जंजीर
देख जरा तूं ओ बे पीर
कितने बैठे हैं दिल गीर, आंखो से है आसू जारी

गाना न ७

[तर्ज- जान से मैं सदके]

२ री गायकी— हुस्न का तू सरदार मेरे प्यारे
जान से मैं सदके
भोली सूरत मोहनी सूरत
जादू हैं नैन खुमार मेरे प्यारे

जान से मैं सदक़े
प्यारी छबीली रंगीली रसीली
चितवत मारे कटार मेरे प्यारे
जान से मैं सदक़े
नोखी छटा पर बांकी अदा पर
लाल की जान निसार मेरे प्यारे
जान से मैं सदक़े

गाना नः ८

(तर्ज—जरा नयनो से नयना मिला)

३ री गायकी— निर मोहिया यार मेरी लेना खबरिया जरा
मोरा जिया तरसे
राह तकत मोरी थक गईं अंखियां
बैठ गई हूं हार मोरा जिया तरसे
प्राण थयम गये ओठों प दम है
गिन्ती हूं दिन चार मोरा जिया तरसे
बाउर मन क्षण क्षण यही सुमिरण
लाल गले का हार मोरा जिया तरसे

(जोधपुर की बेगम का बादशाह के कान मे कुछ कहना)

गाना नः ९

(तर्ज—जहां में इश्क का ले अबतो कोई)

औरंगज़ेब— यह कैसी तुमनें कही मैने क्या सुना बेगम
किसी की जान को आई है क्या क़ज़ा बेगम
हुआ है दुखतेर बिक्रम को हुस्न का जो गरूर
तो आई रूप नगर पर है एक बला बेगम
ये ज़ुल्म तलवों से अपने मले मेरी तस्वीर
जुकाम हो गया मेंडक को आज क्या बेगम
गुलामी आ के करे इस हरम मे वह मगरूर

क़बीला खोजे का होवे वोह बेहया बेगम
खुदाये पाक की ओ दीं की हूं कसम खाता
अभी चखाता हूं इस फ़िक्र का मज़ा बेगम
[जवनि का पतन]

द्वितिय अङ्क

दृश्य १— दर्बार

(राजा विक्रम सभा में बैठे हैं)

गाना नः १०

(तर्ज—ख़ालिक़ तेरी सिफ़त में)

विक्रम—
मालिक तू धन्य है तेरी महिमा अपार है
लीला तेरी अगम है तू सब गुण का सार है
एक बून्द को समुद्र करे थल को जल करे
रज को बनाते शैल नहीं तुझको बार है
विद्युत प्रभा प दृष्ट जो दिल्लीश की हुई
आनन्द का हमारे नहीं पारा बार है
सम्शोद सुन के मन का कमल खिल गया मेरे
तेरी कृपा से घर मेरे आई बहार है
शोभायमान राज सिंहासन प जाके हो
कन्या को शीघ्र करदूं बिदा यह बिचार है

सचिव ! नगर बासियों को आज्ञा दीजीये कि आज से आठ दिन तक सब काम काज को छोड़ कर आनन्द मनावें बादशाह पत्र मे लिखते हैं कि रबिबार को प्रभावती के लेजाने को सेना दिल्ली से यात्रा करेगी तो फिर अब कै दिन रहाही सोम्बार तो गत हो चला और एतनेही दिन में कुल तय्यारी करना है मुगल सेना का आदर भाव अच्छी तरह से होना चाहिये जहेज भी भली भांति देना अवश्य है। अच्छा तो दूत को अब बिदा करना चाहिये। पत्र के उत्तर मे कोटशः धन्य बाद देना उचित है

कि इस तुछ पर जैसी कृपा हुई उसका पलटा नहीं देसकता

दृश्य- २ महल

(विद्युत प्रभा उदास बैठीहै और निर्मला सामने खड़ी है)

गाना नः ११

(तर्ज—जवाहिर माई हमसे रखना तू दूर)

बि०— दुसह दुःख मोहि दियो, भगवान
हिन्दु सुता ह्वै करहिं यमन पति क्षत्री कुलहिँ कलंक
जान बूझ अमृत भष तजि कोऊ कैसे करे विष पान
दुसह दुख मोहि दियो भगवान
पापी म्लेक्ष बिगारन चाहत क्षत्री को कुल कानि
विद्युत सम विद्युत हिय बेधन कटु सम्वाद को बान
दुसह दुःख मोहि दियो भगवान
बंश की गौरवता विनसत है मुगल सेज यदि जाऊँ
जो न जाऊं पितु मरन होत है आपद में पडी जान
दुसह दुःख मोहि दियो भगवान

नि०-तो सखी फिर अब क्या होगा ?

बि०- होगा वही जो विधना ने मेरे भाग्य में लिखदिया है मनुज का क्या समर्थ जो करम रेख को मिटावे पर मैं तो दिल्ली न जाऊंगी

नि०-तुम यदि न जाओगी तो तुम्हारे पिता की क्या दशा होगी यह जानलो कि उनके कंधे पर सिर कभी नहीं रहेगा मुग़लों के अत्याचार का हाल तो पशु पक्षी तक जानते हैं रूप नगर का नाम तक पृथवी से मिटा दिया जायगा। इन सब बातों को भी बिचारा है ?

बि०-मैं तो यहसब समझती हूं पर क्या करूं जो हो सो हो परन्तु हंसनी बक की सेवा कोट वर्ष नहीं स्वीकार करेगी मैं ने मन को दृढ कर लियाहै कि यवन की सेय्या पर जीते जी पांवो न रक्खूंगी।

नि०—इसका क्या अभिप्राय है ?

बि०-है तो एतनांही कि मुग़ल सेना के संग यात्रा करूंगी और दिल्ली के मार्ग में विष खालूंगी

गाना नः १२

(तर्ज—पिदर न कर सितम)

नि०— न आत्मघात कर, प्यारी तू अघ से डर

होती है क्यों अधीर, यगदीश को सुमर

बि०— कोई नहीं है बीर, मेरो हरै जो पीर

बिनसै अवश शरीर, औषद नहीं अपर

सखी किसीको क्या पडी है जो मुझ अभागिन के लिये दिल्लीश्वर से शत्रुता करे राजपुताने के सारे कुलांगार केवल मुग़लों के दास बने हैं हाय न अब प्रताप सिंह हैं और न संग्राम सिंह ही रहे फिर मेरा उद्धार कौन करता है!

नि०—राज सिंह तो है न ?

बि०—हां सखी ठीक कहती है मैं भी यही सोच रही थी कि उन्ही की शरणागत होऊं अच्छा मैं उसी वंश शिरोमणि की सहायता मांगती हूं। (चित्रको हाथमें लेकर) सखो देख यह चित्र मानो बोल रहा है कि यह अगति के गती हैं, अनाथ के रक्षक और अबलाओं के हितकारी हैं मैं अवश्य इन की शरण लूंगी

नि०—पर यह तो माड़वार घराने के शत्रु हैं

बि०—इसकी चिन्ता न कर। बांहु मे बल रहते कोई वीर क्षत्री धर्म्म युद्ध से मुंह नहीं मोड़ता परोपकार नहीं छोड़ता

नि०—तो फिर इनकी शरणागत होने का उपाय क्या सोचा है ? समय बहुत कम है और उदय पुर यहां से दूर है

बि०—मैं एक दूत भेजने का बिचार कर रही हूं

नि०—गुरूजी से बढकर तुम्हारा हित और कौन है दूसरे उनसे परदा क्या है

बि०—मैंने भी उन्ही को भेजने का बिचार किया है तू जाकर उनको बुला ला देख सब बातें उन से वही कहदेना मैं लज्जा से कुछ न बोल सकूंगी

(निरमला जाती है)

गाना न० १३

नाहिन रहयो मन मे ठौर

राज सिंह हिं अछतं कैसे आनिये उर और

चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात
हृदय ते वह बीर मूरत क्षण न इत उत जात
(निरमला और पुरोहित का प्रवेश)

नि०-प्रणाम गुरूजी जी !

पु०-चिरंजीव बेटी तुमने मुझे आज किसलिये स्मरण किया है ?

नि०-अपने प्राण की रक्षा के लिये। गुरुजी इस समय आप को छोड़ कर दूसरा कोई ऐसा हित नहीं देख पड़ता जो इस घोर विपत मे मेरी सहायता करे यह तुच्छ जीव अब आप के हाथ में है चाहे बचाईये चाहे डूबाईये।

पु०-(हंस कर) ह ह ! ह ह !! ह ह !!! रुक्मिणी का ब्याह है ब्राह्मण को द्वारिका जाने पड़ेगा हम समझे। अच्छा तो मैं क्या सम्बाद लेकर उदय पुर का यात्रा करूं?

नि०-मैं एक पत्र लिख कर देती हूं उसे राणा को दीजियेगा और महाराज जब पढ़ चुकें तो यह अंगूठी (हाथ से उतार कर) इन के हाथ मे पहिना दीजियेगा

(प्रस्थान)

जवनि का पतन

—o—

तृतीय अंक

दृश्य--१ पहाड़ी मार्ग

[अनंत मिश्र बगल मे झोली लटकाये आते हैं]

गाना नं० १४

अ०— जपत मन आनन्द शिव शिव,
जपत मन आनन्द
कठिन भूमि, पर्बत कठोर, अति मार्ग भयंकर
शिथिल पवन बहे मन्द शिव शिव
जपत मन आनन्द

गुहा अनेक घंघोर जंगल, नदी वहत अथीर
मनहिं उपजत द्वन्द शिव शिव
जपत मन आनन्द
चोर लम्पट, पशु औ निश्चर, करत याही थल वास
लागि प्राण हि फन्द शिव शिव
जपत मन आनन्द

[दो चोर एक कन्दरा से निकल कर अनंत मिश्र को पकड़ते हैं मिश्र चिल्लाता है]

चोर०–अबे चुप नहीं तो पल मारते प्राण यमलोक चला जायगा। हम लोग जान के द्रोही नहीं केवल माल चाहते हैं जो कुछ तेरे पास मे हो सीधे मन से आगे रखदे

अ० [थरथराते हुये] बाबा हम भिक्षुक ब्राह्मण हैं मेरे पास द्रव्य कहां से आया

चो०–उस झोली मे क्या है ?

अ०–थोड़ा अन्न रास्ते मे खाने को रख लिया था

चो०–अच्छा देखूं [बगल से झोली खींचता है ब्राह्मण घबराता है] हाह ! हा ! एक अंगूठी तो अमूल्य हाथ आई। और क्या है ? वाह चार अशरफियां ।। भला और ? एक पत्र ! यह कैसा ? [पढ़ता है] " उदय पुर के चूड़ामणि, यद्यपि मै आप से अपरचित हूं किन्तु आप के बाहु बल और बीरता की प्रशंसा सुनकर मैंने आप से एक काम मे सहायता मांगने का साहस किया हैं आशा है कि इस हीन मति बालिका को क्षमा कीजियेगा।

पत्रबाहक हमारी कुल के ब्राह्मण पुरोहित हैं इनसे हमारी बिपत्ति का पूरा हाल ज्ञात होगा।

आप क्षत्री बंश के शिरोभूषण हैं राजपूत कुल तिलक हैं हिन्दू कुल रत्न हैं मुझ निसहाय अबला का उपकार कीजिये। यदि आप कहें कि मुझे क्या पड़ी है जो दिल्लीश्वर से बे पर्योजन शत्रुता करूं तो महाराज यद्यपि लज्जा की बात है परन्तु बिन कहे भी नहीं बनता सुनिये ! हमने इस बिपद मे पड़कर प्रण किया है कि जो क्षत्री बीर मुझे मुग़लों के पंजे से छुड़ावेगा यदि शास्त्रोक्त

रीत से मुझे ग्रहण करना चाहेगा तो मैं उसी की दासी होना स्वीकार करूंगी वीरवर। मुझे दृढ़ आशा है कि इस धर्म्म युद्ध से आप मुंह नही मोड़ेंगे पाण्डव ने द्रोपदी और अनिरुद्ध ने ऊषा युद्ध ही द्वारा प्राप्त किया था

मैंने प्रतिज्ञा की है कि यदि मेरा उपकार न हुआ तो दिल्ली के मार्ग मे हीराचाटकर मरजाऊंगी परन्तु यवन की दासी बनकर अपनी कुल की कलंकनी न बनूंगी मर्य्यादा की अवश्य रक्षा करूंगी "

वाह ! यह पत्र तो अमूल्य हाथ लगा आलमगीर बादशाह के दरबारमे चलकर भेंट करूं और तोडा झनकाता हुआ घर लौटूं

[एक सिपाही पीछे से आकर पकड़ता है मानिक सिंह छटपटाता है]

सि०—[चोर का हाथ पकड कर]

गाना नः १५

छुटेगा न अब मुझसे ऐ चोर तू
बला से हो कितनाही शहजोर तू
बिना दण्ड छुटकार तेरा नहीं
किया करता है पाप नित घोर तू
मिलेगा तुझे आज चोरी का फल
ये तलवार सीने मैं ले चोर तू

[चोर को पृथवी पर पछाड कर सीपाही का हाथ मे तलवार लिये हांफना]

गाना नः १६

[तर्ज—बैब तू मुझ पर करना करम]

चो०— तनिक मौ पै रखना दया सरकार
न बनाओ खड्ग को अहार
बिन माँ की एक लड़की है मेरी
जा को दूध अहार
बिलक २ निश्चय मरि जै हैं
व है कौन आधर

सि०-तू मुझको पहिचान्ता है ?

चो०-राणा राज सिंह को कौन नहीं जान्ता

रा०-तेरे रोने पर दया आती है परन्तु तूने एक निर्दोषी ब्राह्मण को लूटा है यदि दण्ड न दूं तो राज धर्म्म से पतित होता हूं

चो०-महाराज लीजिये मै अपना दण्ड अपने हाथ से करता हूं [हाथकी एक अंगुली को खडग से काटताहै] और आप का चरण स्पर्श करके सौगंध खाता हूं कि आज से चोरी न करूंगा

रा०- अच्छा मैने तुझे जीवन दान दिया

चो०-[अशरफी, मुद्रा और पत्र निकाल कर] महाराज ब्राह्मण की जो वस्तु मैंने छीनी थी श्री चरणों मे अर्पन करता हूं

रा०-[पत्र का शिरनामा पढकर] एं यह तो मेरे नाम की चिट्ठी है देखूं

[पत्र पढता है]

अच्छा तुम्हारा नाम क्या है?

चो०-इस अधम को लोग मानिक सिंह कहते हैं मैं राजपूत कुल कलंक हूं

रा०-मानिक सिंह मैं तुम्हारी सरलता से बहुत प्रसन्न हुआ तुम आज से मेरे काम मे नियुक्त हुये अपनी कन्या को संग लेकर उदय पुर चलो मैं थोडे दिन बाद आऊंगा

मा -दास ने पत्र को पढाथा अपराध क्षमा कीजियेगा दास को भी महा राणा के संग चलने की आज्ञा दीजिये कन्या के पोषन का प्रबन्ध करके मैं नियुक्त स्थान पर पहुंच जाऊंगा

(राणा कुछ कहते हैं)

[मानिक सिँह प्रणाम कर के जाता है]

गाना नः १७

[तर्ज़-रूठते हम हैं ज़रा आके मनावे कोई]

रा०- किस तरह चित्त को मेरे हो भला पीर नहीं
दुख के सम्बाद से धरता कभी मन धीर नहीं
सूर्य्य वंशी की हुई चाहती है क्षय मर्य्याद
काहे इन आखों से धारा हो बहे नीर नहीं

राज कन्या को भुजा बल से यवन ले जाये
पृथवी पर रहा क्या आज कोई वीर नहीं
क्यों न कुलवंती को ऐ लाल हो जीना दुर्लभ
धर्म्म के नाश से बढकर है कोई बीर नहीं ॰

हा ! क्या बुरा समय आगया ! एक दिन वह था कि क्षत्री भारत बर्ष के क्षत्र पति थे और आज वही बंश यवनों के दास कहलाने की अपेक्षा करै रही है ! एक दिन वह था कि राजपूत कुल श्रेष्ठ गिनी जाती थी आज उसी कुल के कुलांगार म्लेक्ष को भगनी और बेटी देकर अपना नाम बढाने के लिये उसी कुल की जड़ को जड़ता की छुरी से काट रहे हैं। हा दैव इस बुड़ती बंश पर तेरी कृपा दृष्टि फिर कब होगी ?

असहाय की सहायता करना राजनीति के अनुसार है मैं विद्युत का उपकार अवश्य करूंगा और इसी तुच्छ सेना से मुग़लों का छक्का छुड़ा दूंगा

(नैपथ में "जय महा राणा की जय एक लिंग जी की जय" का शब्द होता है)

रा०-(अनंत मिश्र से) पंडितजी ! विद्युत प्रभा किस दिन दिल्ली की यात्रा करेगी?

अ०-महराज की जय ! रविवार को रूप नगर में सेना पहुंच जायगी

रा०-अच्छा आप रूप नगर लौट जाइये और अपनी राजकुमारी से कह दीजिये कि राज सिंह धर्म्म युद्धही के लिये इस संसार मे आया है संग्राम से कदापि मुंह नहीं मोड़ने वाला है पहिले अपनी जान देलेगा तब तुम्हे यवनो के हाथ मे जाने देगा

दृश्य २ — अन्तःपुर

(विद्युत प्रभा और निरमला देखाई देती है)

गाना नः १८

(तर्ज—कौन सुन्ता है हमारी)

बि- दुख का दल सिर से हमारे आज टलताही नहीं
लाख करती हूं यतन पर जी संभलता ही नहीं
मन की चिन्ता है गुरू पहुंचे उदय पुर या नहीं

सोच के सागर से चित्त अपना निकलताही नहीं
बावरी सी कर रही हूं हो रहाहै जी उदास
हाय पीड़ित मन पर अपने ज़ोर चलतो ही नहीं
भाग्य में बिधना ने जोकुछ लिख दिया होगा वही
लाख कोई सिर धुने यह रेख टलताही नहीं

गाना नः१९

(तर्ज़—मोरी छतियां धड़कन लागी)

नि०— काहे तू जिया को कुढावे
साहस कर मन मे धीरज धर
अवश संदेसा पावे
आपद काल उचित नहीं मन में
कबहु चिन्ता लावे
टेक तू रख भगवान प प्यारी
अंत बहुत सुख पावे

(दासी का प्रवेश)

दा०— राजकुमारी की जय ! महाराज ने सुख संबाद भेजा है, दिल्ली पति की सेना आप को लेजाने को आगई।

गाना नः२०

(तर्ज़—दिले नादां को हम समझाय जायेंगे)

बि०— दुख दारुण से मन कलपाये नाहीं
दुसह बिपद नई आपद निस दिन
काहे तन से निकस जिया जाये नाहीं
सुन के सम्बाद हुआ जाता है सुन मन मेरा
अबतो दुनियां मे कठिन हो गया जीवन मेरा
मुफत बरबाद गया हाय यह योवन मेरा
सुध मे राणा के यह जी होता है अर्पन मेरा
दुरघटने से बचने की सूझे उपाये नाहीं

———o———

चतुर्थ अङ्क

दृश्य--१ मुगल सेना का पडाव

गाना न० २१

गायका— जोबना अकारथ जाय मोरी गोइयां,
जोवना अकारथ जाय
गवना कराय पिया गैले बिदिसबा
बारहु बरिस नहीं आये मोरी गोइयां
जोवना अकारथ जाये
लिखि २ पतिया मैं भेजूं बलम को,
अवधि के दिन नियराय मोरी गोइयां
जोवना अकारथ जाय

ह०— (शराब की बोतल हाथ मे लेकर)
साकी कदहे शराब देदे
महताब मे आफ़ताब देदे
तिशनः लब खुश्क हो रहे हैं
बोतल की दहन मेराब दे दे
दूनी हो हयात एकदम में
एक घोंट शराबे नाब दे दे
सागर हो सबू हो खुम हो जो हो
मुझ को तू बे हिसाब दे दे
हसरत नहीं दिल की दिल मे रहजाय
मैं का मुह मे लोआब दे दे

(एक दिहाती का प्रवेश).

चो०—अबे ओ पलीद बद किरदार नाहिंजार यह क्या गुस्ताखी है सरे दरबार।

बे०— (डरतेहुये) स स स सरकार के नाम की चिट्ठी है

[दौड कर हसनुल्ला खां के आगे पत्र रखता है.]

ह०– [पत्र पढकर] अरे वाह री मेरी किसमत खुशनसीब हो तो मुझसा। वह तो कमबख्त हैं जो तलाशे माशूक मे अपनी जान देते हैं। ज़रा मेरा तालये बेदार मोलाहजा हो बे मेहनत बेमोशक्कत बेला दर्द सर बगैर जाँ फिशानी एक परी पैकर मेरे गले का हार हुआ चाहती है। अल्लाहरे तेरी अदाय दिल रुबाना किस प्यार से खत में लिखती है कि " जिस घड़ी से तुमको देखा है दिल की कैफियत सीमाव की सी होरही है आवो और शरबते वस्ल पिलाओ कल सुबह तुम्हारी कूच है " सूरतिया देखाये जा बांके छैला "

अच्छा प्यारी मैं शौक से आता हूं (नौकर से) अबे चल मैं त्यय्यार हूं

नौ०- ह ह ह जूर वरदी पहिन लीजिये और घोडे पर अस्वार होकर चलिये बड़े घर की बात है कुछ रंडी पतुरिया थोड़े ही हैं

ह०– [स्वागत] हां नफ़र सच कहता है अपनी ठाठ से चलना चाहिये [नौकर से] अच्छा आ खीमे से कपड़े ले लूं

[प्रस्थान]

दृश्य- २ मकान

[बीबी मुन्ना बन ठन कर बैठी है]

गाना नः २२

गजल

मु०- यार तक कासिद भी जाता ही नहीं
ताब यां दिल मेरा लाता ही नहीं
जब से सूरत आंख मे वह छुप गई
कोई नजरों मे समाता ही-नहीं
कैसा मचला है दिले नादां मेरा
कूचये जाना से आता ही नहीं
तेरी ग़फ़लत का गिला किससे करूं
लब प शिकवा मेरे आता ही नहीं
जिस घड़ी से लाल से आंखे लड़ी

दिल को कोई और भाता ही नहीं

[हसन उल्ला खाँ का प्रवेश]

[मुन्ना दौड़ कर गले से लिपटती है]

गाना नः २३

[तर्ज— मैं हार आई रे बालम तोरी लंरकैया]

मु०— करेजवा लगाये जा ओ मोरे सैयाँ
कब की मैं ठाढी २ बाट जोहत हूँ
मूरतिया देखाये जा ओ मोरे सैयाँ
पलकन मे तोहि मून्द रखूँ मैं
नयनवाँ मिलाये जा ओ मोरे सैयाँ
लाल सपथ तो को प्यारे बलमु हैं
न जीया तरसाये जा ओ मोरे सैयाँ

गाना नः २४

ह०— तुम पर तो जाना दिवाना हुआ मैं
बतियाँ तुम्हारी हैं शीरी मीठाई
लब दोनो मिसरी के कन्द
आखों मे जादू बला तेरे गेसू
हो गयो दिल नज़र बन्द
चितवन का तेरे निशाना हुआ मैं
दिल से जुदाई का धूआ उठेगा
भड़केगी फुरकत की आग
जल भुन के दिल खाक होगा ऐ जानाँ
चमकेगा दुश्मन का भाग
तुझ शमः रू का परवाना हुआ मैं

मु०—अजी क्या कहते हो हाय

" चश्म मन बर चश्म तो चश्मान तो जाये दीगर
मन तमाशाये तो बीनम तू तमाशाये दिगर "

ह०— खोदा गवाह है दिल किसी का शेफता नहीं इसलाम की कसम खाकर कहता हूं कि यह दूसरे पर फरेफता नही तुम्हारी ही सूरत इन आखों मे फिरती है ईमान जानता है इसवक्त सारी खिलकत आंखों से गिरती है तूने मुझे बेदाम लिया अपने दौलते हुस्न का गुलाम किया

मु०— अच्छा अब कपड़े उतारिये और पलंग पर आराम फरमाइयें रात थोड़ी है और यहां हल्ला किये हुये दिल की हसरत निगोड़ी हैं

[हसन कपड़े उतारकर पलंग पर लेटता है दरवाज़े मे खट २ का शब्द होता है]

मु०—कौन है ?

[शब्द होता है] अरे मैं हूं

मु०— [हसन से] हाय हाय ग़ज़ब हुआ फलक कज रफतार से देखा न गया आस्मान टूट पड़ा अब क्या करूं

[घबराती है]

ह०-अजी क्या हुआ ? कौन है ?

मु०-मेरा शौहर ! हाय मैं रुसवा हुई जलील हुई कहीं की न रही.

ह०— हाय हाय यह तो बड़ा गजब हुआ । बी बी मुझे बचाना किसी गोशे मे छिपाना मेरी मिट्टी तो और भी खराब होगी

मु०— अरे चुप चुप [खट २ का शब्द होता है] आहिस्ते पलंग के नीचे घुस जा। सांसे रोक कर लेटा रहना भला। मैं खाविन्द को किसी बहाने से फौरन रोखसत कर दूंगी फिर तमाम रात वही मैं और वही सुराही ! समझे ?

ह०— बी बी खूब समझा। [पलंग के नीचे जाकर] यहां तो काफिया तंग हो गया

[माणिक सिंह का प्रवेश]

मा०-दरवाजा खोलने मे एतनी देर क्यों हुई?

मु०— मिया और कुछ नही जरी आखें लग गई थीं। तुमतो कह गये थ क रात भर नहीं आऊंगा

मा०— हां बात तो ऐसीही थी पर एक चीज भूल गया था उसी को लेने आया हूं

मु०— अच्छा तो अपनी चीज लेकर राह लो मुझे नीन्द लगी है

मा०— अच्छा जाता हूं

[हसन उल्ला खां की वरदी पेटी लेकर जाता है]

मु०-अच्छा तो मैं दरवाजा बन्द कर आऊं

[प्रस्थान]

ह०-(पलंग के नीचे से निकल कर)

तेरो सत्या नास हो खाना खराब हो कमबख्त कुछ अजब बलाय नागहानी को तरह खोदा जाने किस जहन्नुम से नाज़िल हुआ था वल्लाह मेरा तो दम घुट गया खैर " रसीदा बूद बलाये वले बखैर गुजश्त" मेरी जान ! (इधर उधर देख कर) अरे यह क्या ? खोदाया खैर तो है ! ईं गुल दीगर शिगोफ़त

(दरवाजे को बाहर से बन्द पाकर)

अरे हाय होय यह क्या हुआ ! कैसी अंधेर कैसा ग़ज़ब ! मैं तो बुरा फसा एलाही तूही मुशकिल कुशा है इस मोसीबत को मेरी गरदन से टाल मुझे इस ज़हमत से निकाल (कपड़ो की ओर देख कर) ऐं वरदी पेटी गायब ! या मज़हरूल अजायब यह कैसा मामला है

गाना नः २८

पड़ गये मक्कारों के पाले । जानो जानों के हैं लाले

ऐसा जुल्म, सितम यह है है । जाने ज़ार को गम यह है है । हो गईं आंखें नम यह है है ।

इस अन्दोह मेयारव अब तो जायेगी जां जायेगी जां

छुटकारा इस कैद से कैसे पायेगी जां पायेगी जां

खूब दिया जुल बदज़ातों ने । घेरा मक्र भरी बातो ने । जानहि लेली इनघातो ने ।

खूब सयाना निकला कुर ।

इनशा अल्लाह मुज़ी तुझको देखूंगा मैं देखूंगा मैं

याद रहे आफत मे एक दिन घेरूंगा मैं घेरूंगा मैं

देखूं कैसे बचता है तू । आफत मे नहीं फसता है तू

हाथ से मेरे छुटता है तू
हिन्दू स्थान है तेरा घर
अबे ओ अहमक तेरा सीना करूं शक्
रंग चेहरे का हो फ़क् होवे लाहक् से हक्
भागे हाय हरामी वाले डाल दिले महजूं मे छाले
(कोठे से कूदता है)
जवनी का पतन

—o—

पंचम अंक

दृश्य —१ पहाड़ी मार्ग

[राणा राज सिंह सेना सहित देखाई देते हैं]

गोना नः २६

[तर्ज—आज शामामोहलीनी बांसुरी बजाय के]

रा०— सावधान इस समय रहो मेरे सिपाहिओ
न इस जगह से एक क्षण हटो मेरे सिपाहिओ
भोर होगई है आचली यवन की सेन अब
समर का शीघ्र तुम यतन करो मेरे सिपाहिओ
धर्म्म क्षत्रीओं का है कि युद्ध से न मोडे मुंह
हृदय मे शिव का नाम ले लड़ो मेरे सिपाहिओ
रण मे हर्ष मन से तुम दिखावो अपना बाहु बल
हो सिद्ध काम प्राण या तेजो मेरे सिपाहिओ

[माणिक सिँह का प्रवेश]

मा०- राणा की जय

रा०— अहा मानिक सिँह तुम आगये ! हैं ! यह बरदी मुगल सेना की तुमने कहां पाई ?

मा०— श्री मान के प्रताप से थोड़ेही परिश्रम से हाथ लग गया एक मोगल सिपाही को धोके मे लाकर इन वस्तुओं को संग्रह किया है अपराध क्षमा कीजियेगा

रा०-(हंस कर) अच्छा युद्ध काल मे सभी चोर और बंचक हैं हम आपचोर की भांति इस शिला मे छिपे हैं और दील्लीश्वर की बेगम को छीन कर ले जाने की घात मे लगे हैं। तुम रूप नगर जाओ और किसी बहाने से पालकी के साथ साथ रहना और विद्युत प्रभा से किसी उपाय से हमारे यहाँ रहने का हाल ज्ञात कर देना

(माणिक सिंह प्रणाम करके जाता है)

———o———

दृश्य २— राज महल

(विद्युत प्रभा और सहेलियां देखलाई देती हैं)

गाना नः २७

(तर्ज — जाय इबरत सराय फ़ानी है)

वि०—
हाय राणा से कुछ न सुध पाई
एक निराशाही मेरे हाथ आई
इस नगर से न जारही हूं मैं
प्राण ही को पठा रही हूं मैं
आओ सखियो विदा करो मुझको
अन्त अवस्था मे देख लो मुझको
हमने दुनिया का कुछ न सुख देखा
हाय जीने मे दुखही दुख देखा
स्रिष्टि विधना ने क्यों हमारी की
क्या मैं भारी थी जगमे हे शिवजी
और कोई नही मिला तुम को
किस लिये छोड़ते हो अब हमको

प्राण धन मेरा आज लूटता है
सुख का सामान हाय छूटता
(मूर्छित होकर पृथवी पर गिरती है)

गाना नः२८

(तर्ज — राजा जी न इस पर जुल्म करना)

सि०– चिन्ता तु मन मे ला न प्यारी
होवें हम सब तो पे वारी
सिर पै ताज बिराज सिंहासन
बड़ भागी पितु अरु महतारी

गाना नः २९

(तर्ज — दिलवर जानी मेरे तूने)

चि०– सुख जाने नही कल पावे तनिक हिय नाही
जिया माने नही हाय सुध हु न क्षण मन माहीं
हाय कारी करू कैसे धीरज धरू

अरे लोगो दौड़ो मुझेकाल के गालसे निकालो दुसह आपद से उबारो मैं दुख के अथाह समुद्र मे डूबी जाती हूं मुझे बचाओ यमराज के पंजे से छोड़ा ओ सखिओ मुहक्या तकती हो इस घोर बिपत मे काम आओ

(पृथवी पर गिरती है)

गाना नः ३०

नि०– काहे दुख पावे रोआवे मोरी प्यारी
तो पै जायें हम सब बारी रे
सुन्दर मुख मुरझाना है तेरा सूखे हैं कोमलगात
कष्ट का दिन टलजाये मिले सुख मान सखी यहबात

काहे दुख पाये रोलावे मेरी प्यारी।

गाना नः ३१

(तर्ज — चाक दामन हो तो पड़जायें रफूगर टांके)

वि०- है विपद काल मे अपना न पराया कोई
जग मे रक्खे न किसी का भी भरोसा कोई
मात्र सुख के लिये संसार है दुख इस मे नहीं
डाल कर हाथ मनुज पर गया मोया कोई
ध्यान दे मन धरे रखवार करे हो न अचेत
सब कोखो बेठा जो एक नीन्द भी सोया कोई
जान मे जान नहीं ज्ञान नहीं होश नहीं
देखले आके ज़रा हाल हमारा कोई
प्राण का क्लेश छुटे सोच मिटे कष्ट हटे
डूबते को यदि हो लाल सहारा कोई

(अनंत मिश्र का प्रवेश)

गाना नः ३२

(तर्ज — क्यों हो आज़ुरदा दिल)

अ०- मरते मरते बची जान भगवान भगवान
भगवान भगवान भगवान भगवान
बसत उदय पुर हाय बहुत दूर
चलते चलते हुये हम हलकान हलकान
अग्नि क्षुधा की भभके उदर मे
कछु लाओ लाओ लाओ जलपान जलपान

वि०- अरे यह तो गुरू जी मालुम पडते हैं।

(दौड़ कर गुरु के पांव पर गिरती है)

गाना नः ३३

(तर्ज—कहो क्या है दिल पर ग़म नागहानी)

कहो क्या सुसंबाद लाये गुरू जी
बड़े कष्ट मे आप आये गुरू जी
पीड़ित मन हर्षित हुआ प्रफुल्लित गात
चित द्रढ़ है वसन मे नाहीं अंग समात
मेरे प्राण तुम ने बचाये गुरू जी

अ०- अररर मरगये (पृथवी पर बैठते हैं)

बि क्या हुआ गुरू जी कुशल से तो वहां पहुचे थे न ? मेरी प्रार्थना का क्या उत्तर मिला शीघ्र कहिये चित व्यग्र हो रहा है

अ०- इश्वर की कृपा से तुम्हारा कार्य्य सिद्ध हो गया महराज तुम्हारी रक्षा करेगें मुग़ल सेना से युद्ध करने की सौगंध खाई है

बि०- इश्वर तू धन्य है

दृश्य- ३ मकान

(यसोदा मिसराइन देखाई देती हैं)

गाना नः ३४

(तर्ज —छोड़ गये दिलदार)

उठत करेजे पीर

य०- ले मैं काहु करू मन पकरत नाहिन धीर
राज सजन बिन केहि को भावे
सुधि तन मंन मे आग लगावे
जियरा जाये प चैन न आवे
होवत चित्त अधीर
मिसिर गये अबहूं नहीं आये
पाये संदेस न पत्र पठाये
हाय पुरी कस भीर !

[दरवाजे में खट २ का शब्द होता है]

य०- अरे कौन है ?

[शब्द होता है] प्यारी मैं हूं तुम्हारा प्यारा अलबेला रंगीला रसीला छबीला अनंत तुम्हारा कंत

यसोदा दौडकर केवाड़ खोलती है

[अनंत मिश्र का प्रवेश]

गाना नः ३५

[तर्ज — वह हूर नूर कुदरत के सांचे ढाली]

[अनंत मिश्र के गले लिपट कर]

य० - ऐ प्यारे दुलारे इन आखों के तारे
भोजन मे रुचि नही आंखों मे नीन्द थी
मै खो बैठी सुध बुध तुम जब से सिधारे
चातक के चख जनु तुमरे दरस बिनु
आठ आठ आंसू रोते थे नयना हमारे
धक धक हृदय अरु फक फक है जियरो
लग जा करेजवा न जिया तरसारे

गाना नः ३६

[तर्ज सोहन मोरी रे]

मोहनि रूप तू प्यारी सुघरवा सोहन मोरी रे
षटरस पागी बतियां तिहारी लोचन मद भरी तोरी रे
अलबेली नारी प्रेम चखावें ।
आओ गले लगै गोरी रे ।

य०- अच्छा प्यारे अब चलो हाथमुंह धोवो राह की मान्दगी खोवो

[प्रस्थान]

दृश्य ४ — पहाड़ी मार्ग

[राणा राज सिंह सैना सहित पहाड पर बैठे हुये देखाई देना मुगल सेना का बीच मे पालकी सहित देखाई देना डोला के आगे-वाले सिपाहिओं पर

पत्थर की वृष्टि होना पालकी कहारों का एक कन्दरे में घुस जाना पिछले सिपाहिओं का रुकना कन्दरे के मुंह पर मुग़ल सेना का तोप लगाना: विद्युत प्रभा का बाहर आना मुग़ल सेनापति से बात चीत होना राज सिंह का सेना सहित पहाड़ के नीचे आना]

बि०— मुग़ल सेना के सेनापति कौन हैं ? मैं उनसे बातें करना चाहती हूं

मो०— यह फौज इसी नाचीज के हवाले है

वि०— अच्छा तो मैं दिल्ली चलना स्वीकार करती हूं मुझे आप ले चलें.

मो०— इन रहजनों को ज़रा सर करलू तो चलूं

बि०— यह उदयपुर के राणा राज सिंह हैं सुनिये मैं हिन्दू कुल की कन्या हूं आप के महाराज यवन है उनके पास जाने से मेरा धर्म्म नष्ट होता इसलिये मैं ने अपने उपकार के लिये राणा जी का स्मरण किया था

मो०— हह ! हह ! वल्लाह मेडक को ज़ोकाम हुआ था के शेर का मोकाबला करने रोबाह आया.

बि०— यह तो न कहिये येलोग क्षत्री हैं आपने तो देखाही कि इस तुच्छ सेना से आप के कितने लोग नष्ट हुये

मो०— आप के मदद को जब चले तो इतने कम सिपाह क्यों साथ लाये थे पूरे लश्कर से आते और मोक़ाबले मे लड़ते तो अलबत्तः मैं समझता के हां बहादुर हैं चिड़िमार सा छिप कर शिकार करका कौन सी जवां मरदी है

[राज सिंह का प्रवेश]

रा०— हां हां आओ और क्षत्रीयों की वीरता देखो कि केतने जानें लेकर एक जान देते हैं

मो०— [सेना से] जवांमरदों बकन्दाजी करो गोले चलाओ: तोपें दागो

बि०— लीजिये पहली वार मुझपर कीजिये क्यों कि झगड़े की जड़ मैं हूं

रा०— क्षत्री कुल मे आप व्यर्थ कलंक लगाती हैं लोग कहेंगे कि स्त्री की सहायता से राज सिंह बचा। पहिले हम लोग प्राण देलें फिर आपका जो जी चाहे करना

मो०— हमारे बादशाह औरतों से नहीं लड़ते [सैना से] तोपें हटालो.

[यवन सेना पर पीछे से बन्दूकों का फ़ैर होना बहुतेरे का मारा जाना बाक़िये का घबराहट से इधर उधर भाग जाना]

—०—

दृश्य-- ५ रास्ता

[राणा राज सिंह और विद्युत प्रभा देखाई देना]

गाना नः ३७

[तर्ज—प्यार मोहनियां निबाहना होगा]

जान मेरी बचाई तुमने
मुग़लों से छोड़ाई तुमने
ऋण से तुम्हारे न हूंगी मैं उऋन
सिंह से की लड़ाई तुमने
दासी हुई इस समय से तुम्हारी
कुल की रक्खी बड़ाई तुमने

गाना नः ३८

[तर्ज — क्या रंग बदलने लगा]

रा०—
समरथ से मनुज पीर कभी हर नही सकता
जगदीश की इच्छा बिना कुछ कर नही सकता
हो व्यर्थ सुधापान निकल जाय अवश प्राण
मरना यदि चाहे तो कोई मर नही सकता
भगवान के सुमरन से सफल होता है कारज
सिद्ध करने की हामी तो कोई भर नही सकता

[माणिक सिंह का प्रवेश]

रा०- माणिक सिंह ! तुमतो मुग़ल सेना के संग थे कुछ जानते हो कि यह अकस्मात सहायता किस की ओर से हुई जिससे शत्रु के दल का सत्यानाश हुआ और हम सब के प्राण बचे

मा०— महाराज ! दासने जब यह देखा कि शत्रु ने रन्द्र के मुंह पर तोपें लगा

दीं तो फिर महाराजधिराज के थोड़ी सी सेना का बचना असम्भव है। दास तुरंत घोड़े पर हवा हुआ और रूप नगर पहुंच कर राजा विक्रम से कहा कि ५००० डाकू लोग डोले को पहाड़ियों के निकट घेरे हैं आप अपनी सेना शीघ्र भेजिये राजा ने १००० सेना हमारे संग कर दिया

रा०— बस बस माणिक सिंह तुम सचमुच प्रभु भक्त हो अच्छा ईश्वर ने चाहा तो उदय पुर पहुंच कर तुम्हारी यथोचित आदर करूंगा

गाना नः ३९

[तर्ज — दिन आया बहार का]

सब— दिन भागा बिषाद का काहे न मन हो बावला
बावला बावला बावला हो

रा०- ईश्वर ने लाली रखी मेरे मुंह की

बि०— शत्रु गये मुंह सावला हो

सब— दिन भागा बिषाद का काहे न मन हो बावला
लाल कहे हूँ सब काम पूरा जापै दयाल वह सांवला हो
दिन भागा बिषाद का काहे न मन हो बावला

इति

